

जग के खिवैया (६६)

जागे भाग तेरे सुखदेवी मैया आए गोद तेरी जग के खिवैया
सत्य कथा यह सुनु मेरी मैया प्रसन्न भए तुम पर रघुरैया
बाल रूप में वही प्रघटैया॥

सिंधु देश के चमके सितारे प्रेम मार्ग के दिखावन हारे
खेलेंगे तेरे इन अंगनैया॥

अलख अगोचर अज अविनाशी सगुण भए सोई प्रभू
सुखराशी
जांके नख जोति चंद्र जनमैया॥

तेरी गोद जननी फले और फूले सुवन सलोना पालने में झूले
शारदा गणेश बने लोरी के गवैया॥

जग मंगल जांका नाम मनोहर सोई भया तेरा बालक सुन्दर
जग की तू ही जननी कहैया॥

परा प्रेम रस सों जब गावे सनने को सीय रघुवर आवे
मैगसि चन्द्र पै बलि बलि जैया॥